%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 254

No. 157

Lakshmī Narasiṃha Temple at Śiṃhāchalam<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 896; A. R. No. 230 of 1899;

I. M. P. Vol. III, P. 1679, No. 118 )

Ś. 1209<2>

(१।) स्वस्ति श्री [।।] भारद्वाजान्वये जातः पूर्व्व राघवनायकः

स्ववंशवृद्ध्यैर्नृहरे[ः] श्रीजय-

(२।) ंत्तिमहोत्सवे [।। १] गुड़मिश्रतिलस्फीतनैवेद्यं सर्मकल्पयत्

पौत्रस्तु तस्य भूयोपि पुरषोत्त-

(३।) मनायकः स्वायुरारोग्यसंत्तान कीत्तिसंप्पत् समृद्धये [।। २]

शाकाब्दे रत्न खाक्षि क्षितिपरिगणिते फाल्गु-

(४।) णे मासि शुक्ल द्वादश्यां भानुवारे नरहरिभवने गंड

सन्निष्कयुग्गं [।] प्रादादाचंद्रतारं हरिध-

(५।) रणि धराधीशितुः जीजयंत्तीजात[ः] श्रीकृष्णमूर्त्तर्व्विविध-

रसलसत भूरिवैवेद्य हेतोः [३] सुग धिसौ-

(६।) गन्धिक पुष्पमालाः श्रीमन्नृसिहस्य समप्पणाय ददौ

हरैरायतने स एष सार्द्धसुनिष्कद्वयमात्म-

(७।) भूत्यै । [४] स्वस्ति श्री शकवरुषंवुलु १२०९ गुनेंटि

पा(फा)ल्गुण शुक्ल द्वादशियु आदिवारमुनां-

<1. In the twenty-second niche of the verandah round the central shrine of this temple. This niche is now built into a modern masonary wall.>

<2. The corresponding date is the 15th February, 1288 A. D. Sunday.>

%%p. 265

(८।) डु श्रीनरसिंह्यनाथुनि श्रीजयंत्तिमहोत्सवमुनकु

राघवनायकुंडु चेसिन धर्म्मवु मीं-

(९।) द्द वीरि मनुमंडु पुरषोत्तमनायकुंडु तमकु आयुष्कामार्त्थ-

सिद्धिगा श्रीजयंत्तिनां टे रात्रि श्रीनरसिं-

(१०।) ह्यनाथुनिकि अरगिंप्प नैवेद्यमुलु अप्पालु डलरु<\*>

पायसालुलोपैन वस्तुलकु श्रीभंडारमु-

(११।) न ओडुकु गडमाडलु रेंडु ई पूराइनायकुंडु तनकु संत्तानाभि

व्रि(वृ)द्धिगा श्रीनरसि[ं]ह्यनाथुनिकि नित्यमु

(१२।) चे ग्गल्वमाल समप्पि(र्प्पि)च्छटि निवध ओकट्टिकि

श्रीभंडारमुन ओडुकु मल्लमाड ओक[ं]डुनु चिन्नालु आरु

(१३।) ई धर्म्म श्रीवैष्णवुल रक्ष [।।] शत्रुणापि कृतो धर्म्म[ः]

पालनीयो मनीषिभिः शत्रुरेव हिः(हि) शत्रु[ः]स्या[द्ध]र्म-

(१४।) ः शत्रुन्र कः(क)स्यचित् [।।]

<\* Probably it is same as the ḍāli used in the Jagannātha temple at Pūri.>